20/12/25

पाठ-16 हम सब सुमन एक उपवन के

सुलेख

हम सब सुमन एक उपवन के।
एक हमारी धरती सबकी
जिसकी मिट्टी में जन्में हम
मिली एक ही धूप हमें है
सींचें गए एक जल से हम।
पले हुए हैं झूल-झूलकर
पलनों में हम एक पवन के।
सूरज एक हमारा, जिसकी
किरणें उर की कली खिलातीं
एक हमारा चाँद, चाँदनी
जिसकी हम सबको नहलाती।

20/12/25

पाठ-16 हम सब सुमन एक उपवन के

शब्दार्थ

1) सुमन - फूल
2) पवन - हवा
3) स्वर - आवाज़
4) गगन - आसमान
5) उपवन - वाटिका
6) उर - हृदय
7) भ्रमर - भौंरा
8) सूत्र - धागा

क॰का

20|2|25

# पाठ-16

## हम सब सुमन एक उपवन के

बताइए -

प्र०-1 यह कविता किस भाव की प्रेरणा देती है?

उ०-1 यह कविता एकता की भावना की प्रेरणा देती है।

प्र०-2 प्रकृति के किन-किन रूपों में एकता दिखाई देती है?

उ०-2 प्रकृति के उपवन, क्यारियाँ, फूलों आदि में एकता दिखाई देती है।

प्र०-3 इस कविता के रचयिता कौन है?

उ०-3 इस कविता के रचयिता द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी है।

क.का

20/12/25

पाठ-16

उत्तर लिखिए -

प्र०-1 कविता में सुमन किन्हें कहा गया है?

उ०-1 कविता में फूलों को सुमन कहा गया है।

प्र०-2 सूरज हमारे लिए क्या-क्या करता है?

उ०-2 सूरज हमारे लिए धूप, प्रकाश, गर्मी व ऊर्जा देता है।

प्र०-3 उपवन की शोभा किससे होती है?

उ०-3 उपवन की शोभा रंग-बिरंगे फूलों व पेड़-पौधे से होती है।

प्र०-4 काँटो से हम क्या सीखते है?

उ०-4 काँटो से हम मुसीबत तथा परेशानी में भी खुश रहना सिखते है।

प्र०-5 इस कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है

उ०-5 इस कविता से हमें एक साथ मिलकर रहने की शिक्षा मिलती है।